जब हम अब्राहम की ओर देखते हैं, उसे हम “विश्वास का पिता” कहते हैं — क्योंकि उसने उस परमेश्वर में अबाध भरोसा रखा, जो उसने वादा किया था। बहुत वर्षों तक उसने उस पुत्र का इंतज़ार किया, जिसका दाता परमेश्वर था, और दोनों — वह और उसकी पत्नी — उम्रदराज़ हो चुके थे। फिर भी उसने उम्मीद नहीं छोड़ी। उसने भरोसा बनाए रखा और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की, जब तक कि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं की। फिर भी, उस पुत्र के प्राग्भव के बाद परमेश्वर ने उसे फिर से परीक्षा में डाल दिया — उसी पुत्र को बलिदान के लिये तैयार होने को कहा। लेकिन अब्राहम डगमगाया नहीं — उसने आज्ञा मान ली। इस दृढ़ विश्वास ने परमेश्वर को प्रसन्न किया।

लेकिन क्या सिर्फ यही कारण था कि परमेश्वर ने अब्राहम को “विश्वास का पिता” बनाया — चाहे आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए उदाहरण रखा जाए? नहीं। हमें एक गहरी बात समझनी होगी — आज उसी पर हमारा ध्यान है।

जब हम इब्रानियों का पत्र पढ़ते हैं, हमें अब्राहम द्वारा परमेश्वर के प्रति दिखायी गयी एक विशेष प्रवृत्ति मिलती है। जैसे:

“विश्वास से अब्राहम ने वह बुलावा सुना कि उस स्थान को

छोड़कर चलें, जिसे वह उत्तराधिकारी बनने वाला था; और चल पड़ा, यह न जानते हुए कि वह कहाँ जा रहा है।”
(इब्रानियों 11:8)
“विश्वास से उसने प्रतिज्ञा के देश में परदेशी की तरह निवास किया, तम्बुओं में; साथ‑साथ इसहाक और याकूब के, जो उसी
प्रतिज्ञा के एक ही उत्तराधिकारी थे। 10 क्योंकि उसने उस
नगर की प्रतीक्षा की, जिसके नींव हैं, जिसका निर्माता और निर्माता परमेश्वर है।” (इब्रानियों 11:9‑10)

अगर तुम इन पदों को ध्यान से देखो, तो पाओगे कि अब्राहम की दृष्टि सिर्फ उस शारीरिक प्रतिज्ञा तक सीमित नहीं थी, जो परमेश्वर ने उसे दी थी। यही वह कारण है कि जीवन भर उसने उन बातों को लेकर परेशान नहीं हुआ, जो क्षणिक हैं — न बच्चों की प्रतीक्षा ने उसे विचलित किया, न अपने पुत्र को बलिदान देने का आदेश।
उसने कहा गया था (पद 9)‑ “… प्रतिज्ञा के देश में परदेशी की तरह रहा…” — यानी उसने उसे स्थायी घर न माना।

याद करो: परमेश्वर ने अब्राहम को बहुत दूर “उर के हाल्दियों” से बुलाया और उसे कानान में लाया — उस भूमि पर, जिसे उसने उसे वादा किया था, एक नींव‑युक्त भूमि, एक बड़ा वंश, समृद्धि और शक्ति। सोचो कि यदि परमेश्वर तुम्हें कहें: “तुम्हारे द्वारा सारे राष्ट्र आशीष पाएँगे …”, तो तुम स्वयं को विशेष महसूस नहीं

करोगे? क्या तुम नहीं कहोगे कि तुम परमेश्वर के सामने दूसरों से अलग हो?

लेकिन अब्राहम ने ऐसा नहीं किया। उसने एक अलग नजरिया अपनाया। वह केवल भौतिक आशीषों—बहुत संतान, बहुत समृद्धि, बहुत प्रभाव—तक ही नहीं देख रहा था। उसने शांत मन से विचार किया: “यही सब है? यदि परमेश्वर मुझे महान वंश देगा, मुझे इस भूमि का वारिस बनाएगा, तो इस पुत्र में देरी क्यों?” उसने समझा कि उसका जीवन एक चित्र है — एक संदेश है, जो इस संसार से परे आनेवाली बातों का है। वह समझ गया कि उसके जीवन से परमेश्वर भविष्य के विषय में बोल रहा है — पर्दे के पीछे की बातें।

इसी कारण है कि अब्राहम ने, भले ही उसे भौतिक समृद्धि दी गई हो, फिर भी उस भूमि में जीवन बिताया, जो प्रतिज्ञा द्वारा मिली थी — लेकिन परदेशी की तरह। बाइबिल कहती है कि उसने अपनी पत्नी सारा के साथ तम्बुओं में रहा — जैसे कि वह भूमि उसकी स्थायी नहीं थी। एक बहुत समृद्ध व्यक्ति, फिर भी उसने महल नहीं बनाए। यह हमें क्या सिखाता है? कि वह इस धरती पर यात्री था।

क्या इसका मतलब यह था कि वह परमेश्वर की दृष्टि में कम‑मूल्य था? बिल्कुल नहीं। लेकिन उसकी दृष्टि क्षणभंगुर चीजों पर नहीं थी। उसने आगे देखा। उसने उस नगर की प्रतीक्षा की — “जिसके नींव हैं, जिसका निर्माता और निर्माता परमेश्वर है”

(इब्रानियों 11:10)। उसने उसे स्वयं नहीं बनाया। उसने उस प्रतिज्ञा में रहा, लेकिन देख रहा था आगामी चीजों को।

और वह नगर कोई और नहीं बल्कि नया यरूशलेम है — वह स्वर्गीय नगर, जो मसीह की दुल्हन है।

और यही दृष्टि, यही समझ, जिसने परमेश्वर को अब्राहम के प्रति प्रसन्न किया और उसे सभी आनेवालों के लिये उदाहरण बना दिया — आप और मैं भी शामिल।

आपके लिए एक संदेश

प्रिय मित्र, शायद आप आज किसी वादे की प्रतीक्षा कर रहे हैं — शायद संतान, घर, संपत्ति, या चिकित्सा। शायद यह वादा अब पूरा हो चुका है। लेकिन क्या आप सोचते हैं कि बस यही परमेश्वर की पूरी इच्छा आपके जीवन के लिए है?

सावधान रहें कि आप केवल भौतिक प्राप्ति को परमेश्वर की पूर्ण योजना न मान लें। हाँ, परमेश्वर अपना वचन पूरा करेगा। लेकिन यदि आपके पास अब्राहम जैसी समझ नहीं है, तो आप सबसे बड़ी विरासत खो सकते हैं। जैसा कि प्रभु यीशु ने कहा:

“मैं तुम से कहता हूँ: पूर्व से और पश्चिम से बहुत‑से आएँगे
और आकर आबराहम तथा इसहाक तथा याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य
में खाने की मेज पर बैठेंगे; 12 परन्तु राज्य के पुत्रों को बाहर फेंका जाएगा, अंधकार में; वहाँ विलाप और दाँतों का
पीसना होगा।” (मत्ती 8:11‑12)

देखिए? हर वह व्यक्ति जो खुद को विश्वासयोग्य कहता है, अब्राहम के साथ नहीं बैठेगा। हर वह व्यक्ति स्वर्गीय नगर में नहीं जाएगा — सिर्फ वही जो उस ऊँचे दृष्टिकोण से जी रहे हैं।

नया यरूशलेम मसीह की दुल्हन है — पवित्र, मुक्त, पूर्ण बने लोग। हर कोई जो “मसीही” कहता है, स्वचालित रूप से उसमें शामिल नहीं है। जैसे कि सभी इस्राएली वास्तव में इस्राएल नहीं थे, वैसे ही सभी ईसाई वास्तव में मसीह के नहीं। बाहरी नाम और भीतरी परिवर्तन में फर्क है — दिखावा विश्वास और असली यात्रा में अंतर है।

उन लोगों का वर्णन इस प्रकार है, जिन्होंने उस नगर में प्रवेश किया:

“सभी से शान्ति के साथ रहने का प्रयत्न करो और पवित्र होने
का प्रयत्न करो; क्योंकि पवित्रता के बिना कोई भी प्रभु को

नहीं देखेगा।” (इब्रानियों 12:14)
“और वहाँ एक राजमार्ग होगी, उसका नाम लगेगा ‘पवित्रता का
मार्ग’; अशुद्ध उस पर नहीं चलेंगे; मूढ़ उस मार्ग पर नहीं चलेंगे।” (यशायाह 35:8)

अगर आपको ऐसा लगता है कि आपके जीवन में कुछ कमी है — अभी समय है। नगर तैयार हो रहा है। अनुग्रह का द्वार अभी खुला है — लेकिन सदा नहीं रहेगा। संसार की संपत्ति या राह चलते आराम को उस महान यात्रा से ऊपर मत आने दीजिए।

“और मैं ने नया स्वर्ग और नई पृथ्वी देखी; क्योंकि पहला
स्वर्ग और प्रथम पृथ्वी छुट चुके थे … और मैंने पवित्र नगर,
नया यरूशलेम, स्वर्ग से उतरता देखा, तैयार की हुई एक दुल्हन
की तरह अपने पति हेतु सजी‑धजी …” (प्रकाशितवाक्य 21:1‑2) “…और देखें! परमेश्वर का तम्बू मनुष्यों के बीच रहेगा। वह उनके साथ रहेगा और वे उसकी प्रजा होंगे …”
(प्रकाशितवाक्य 21:3)
“…और मृत्यु नहीं रहेगी, न शोक, न चीख‑पुकार; क्योंकि पहले
की बातें चली गईं।” (प्रकाशितवाक्य 21:4)

उस नगर की नींव धन, प्रतिष्ठा या सांसारिक सफलता पर नहीं टिकी

है। वे नींव हैं — प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर — अर्थात् शुद्ध शास्त्र पर। उस नगर के निर्माण सामग्री पवित्रता, बुलावे और सेवा की कहानी कहती हैं। अनमोल पत्थर। शुद्ध सोना। परमेश्वर की प्रकाश। और वहाँ कोई अशुद्ध नहीं होगा।

आपको मेरा निमंत्रण

इसलिए मैं आपसे पूछता हूँ: क्या आप उस पवित्र नगर का हिस्सा हैं? क्या आपका जीवन मसीह की दुल्हन के अनुरूप है? यदि आज वह आएँ — क्या आप तैयार हैं, उनके साथ चलने के लिए? क्या आप एक स्वर्गीय दृष्टि के साथ जीते हैं — या सिर्फ भौतिक आराम के लालच में?

क्या आपके पाप धोए गए हैं? क्या आपने सच में बपतिस्मा लिया है — पूर्ण बिल्हारण जल में, प्रभु यीशु मसीह के नाम पर? और अगर हाँ — तो क्या आपका जीवन पवित्रता को दर्शाता है?

क्योंकि शास्त्र कहता है: “पवित्रता के बिना कोई भी प्रभु को नहीं देखेगा।” (इब्रानियों 12:14)

अगर आपको लगता है कि आपके जीवन में कुछ कमी है — तो ये आपका क्षण है। जब तक द्वार खुला है — उस ऊँचे बुलावे का पीछा करें। सिर्फ

उस भूमि का इंतज़ार न करें, बल्कि उस नगर का, जिसका निर्माता परमेश्वर स्वयं है।

“यशायाह 35:8 – और वहाँ एक राजमार्ग होगी, उसका नाम होगा ‘पवित्रता का मार्ग’ …”

मेरी प्रार्थना है कि आप आज पश्चात्ताप करें, और प्रभु आपको पवित्रता और शुद्धता में जीवन जीने की कृपा दें। बहुत‑बहुत आशीर्वाद!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp